श्रीमद्भगवद्गीता का कर्मयोग

अखिलेश कुमार पटेल

श्रीमद्भगवद्गीता की प्रवृत्ति युद्ध से विरत हुये अर्जुन को युद्धरत करने के लिए हुई है और गीता का ज्ञान इसमें सफल भी रहा है। अतः मानना होगा कि गीता प्रवृत्तिप्रधान ग्रन्थ है।

सम्पूर्ण गीता निष्काम कर्मयोग का शास्त्र है, इसमें कर्मयोग के प्रत्येक पहलू पर विशद् रूप से विचार किया गया है। पूर्वकाल में वर्णन की रीति समास व्यास विधिना थी। किसी विषय को थोड़े शब्दों में कह दिया जाता था और आगे उसी का विस्तार किया जाता था।